आकर्षणविहीन प्रेम

एक दिन अचानक मेरे दिल में एक ख्याल आया,
ख्याल क्या आप समझिये कि जेंहन में एक सवाल आया ।
प्यार क्या होता है? सत्य और शाश्वत प्यार ।
प्यार जो गंगा से भी ज्यादा पवित्र होता है
प्यार.....क्या ये.....

सुदूर पार्क में स्थित टहलते हुए उन युगलो के बीच में होता है, जिनका ध्यान भावनाओं से ज्यादा इस बात पर अधिक होता है कि आज उसके साथी ने ड्रेस कौन सी पहन रखी है ''तुम्हारे उपर ये पटियाला ज्यादा अच्छा लगता है'', ''क्या यार ये गागल्स चेन्जस भी कर दो, वो लेटेस्ट वाला लाओ ना ।

या कैफे कॉफी डे में मंहगी कॉफी की चुस्कियां लेते हुए जोड़ो के बीच के प्यार को ही प्यार कहते है ।

या प्यार वह है जो मंहगी गाड़ियों पर घूमता है और लेटेस्ट मोबाइल्स पर बात करता है ।

लेकिन कहीं सुना था सत्य कड़वा होता है, नीरस होता है । मै भी एक ऐसे ही प्यार की बात कर रहा हूँ जो नीरस है, आकर्षण विहीन है किन्तु सत्य और शाश्वत है ।

किसी गांव में एक बुढ्ढा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था ।

वह आज बुढ्ढा था, तीस साल पहले नहीं था, जब कमाने और खिलाने लायक था बच्चों का बापू था, आज जब घर बैठकर खाने की बारी आयी बच्चो के लिए सिरदर्द बन गया । चार लड़के थे, थे क्या है बाहर रहते है, अपने अपने प्यार के साथ ।

बुढ़िया ने अपने बुढ्ढे को ध्यान से पहली बार शादी के बाद ही देखा था, और उसी दिन से अपने को परिवार के लिए समर्पित कर दिया । जवानी में बच्चों की खातिर पेट काटा था शायद इसीलिए आज उसके पीठ और पेट एक है ।

आज बुढ्ढा सुबह से ही बुढ़िया से नाराज था सुबह बुढ़िया की पिटाई भी

कमशः 2

की थी और बुढ़िया ने गालियों की बौछार । सच ही है गरीबी और बुढ़ापा इंसान को शैतान बना देते हैं। कौन कहता है साठ के बाद इंसान चिड़चिड़ा हो जाता है। इन्सान को चिड़चिड़ा ये वक्त और हालात बना देते हैं।

3 रोटियां बनी थी बुढ़िया ने 2 बुढ्ढे के लिए रखी, 1 अपने लिए । दोपहर हो गई । बुढ़िया ने खाना नहीं खाया, खाती भी तो कैसे बुढ्ढा नाराज था तो क्या भूखा भी तो था, मनाने पहुँची तो फिर शुरू हो गई घमासान । अचानक इतने में बच्चों की एक टोली बुढ्ढे को ''खंडहर वाला बुढ्ढा'' चिढ़ाकर भागी ।

बच्चों ने चिढ़ाया क्या बुढ़िया ने आव देखा न ताव, मैली धोती कमर से बांधी और गालियों की दिशा बदल दी, दौड़ा लिया बच्चों को । यह सब मैं खड़ा देख रहा था बोला, ''काकी ये क्या जब तुम काका को खुद गलियां दे रही थी तो कुछ नहीं और बच्चों ने थोड़ा सा चिढ़ा दिया तो ये ..... मैं कुछ समझा नहीं ।''

इतने में वह बुढ़िया बोली, ''तुम समझोगे भी नहीं नई नसल के हो न मेरा मरद है, मै गाली दूँ, गलौज करूँ तुम्हे क्या । तुम होते कौन हो जब मेरे बेटो ने यहां मरने के लिए छोड़ा तो कौन आया था ? ये वही बुढ्ढा था जिसने अपने दिल को पत्थर बनाकर मेरे आँसू पोछें। भूखे पेट रहकर मेरी दवा दारू करायी । कोई नहीं आया पूछने, ''कैसी हो काकी ।'' अरे बूढ़ा है तो क्या मरद है मेरा, सहारा है मेरा । तुम नये लोग इश्क, मोहब्बत, प्यार बड़ी-बड़ी बाते करते हो, जब गरीबी, बुढ़ापा, तन्हाई सब एक साथ घर करेंगे तो पता लगेगा । जाओ बेटा जाओ और अगर फिर से मेरे बुढ्ढे को किसी ने ''खंडहर वाला बुढ्ढा'' कहा तो पसलियां तोड़ दूँगी । और चली गई ।

मै देख रहा था वह हड्डियों का ढ़ाचा, वह ''खंडहर वाला बुढ्ढा'' आँखों में आँसू भरे रोटियाँ तोड़ रहा था ।

एसे नीरस, आकर्षणविहीन परन्तु गंगा से भी पबित्र सत्य और शाश्वत प्रेम को मैं सत् सत् प्रणाम करता हूँ।

संतोष कुमार द्विवेदी